रति सक्सेना का समग्र साहित्य: एक अध्ययन

RATHI SAXENA KAA SAMAGRA SAHITHYA: EK ADHYAYAN

पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

रूप-रेखा (SYNOPSIS)

SUBMITTED TO

MANGALORE UNIVERSITY FOR THE AWARD OF

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN HINDI

शोधनिर्देशिका

डॉ. नागरत्ना एन. राव

असोसियेट प्रोफेसर, स्नातकोत्तर हिन्दी
अध्ययन एवं अनुसंधान केन्द्र
विश्वविद्यालय कॉलेज मंगलूरु
मंगलूरु – 575001

शोधार्थी

अर्चना शेणै के.

अनुक्रमांक: 166302701
स्नातकोत्तर हिन्दी अध्ययन एवं
अनुसंधान केन्द्र
विश्वविद्यालय कॉलेज मंगलूरु
मंगलूरु – 575001

Research Guide

Dr Nagarathna N Rao

Associate Professor
Dept of Postgraduate
Studies and Research in
Hindi
University College

Researcher

Archana Shenoy K.

Reg. No. 166302701
Dept of Postgraduate
Studies and Research in
Hindi
University College

: अनुसंधान केंद्र :

स्नातकोत्तर हिन्दी अध्ययन एवं अनुसंधान केन्द्र

विश्वविद्यालय कॉलेज मंगलूरु, मंगलूर विश्वविद्यालय

DEPARTMENT OF POSTGRADUATE STUDIES AND RESEARCH IN HINDI
UNIVERSITY COLLEGE MANGALURU, MANGALORE UNIVERSITY

2021

रति सक्सेना का समग्र साहित्य: एक अध्ययन

RATHI SAXENA KAA SMAGRA SAHITYA: EK ADYAYAN

प्रस्तावना

साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य के अनेक उद्देश्य हैं। साहित्य और समाज एक दूसरे के बिना अपूर्ण हैं। साहित्य के विविध प्रकार की धाराएँ समाज में शांति तथा क्रांति के लहरों के साथ बहती रहती हैं। मनुष्य परंपरागत विचारों के साथ जीवन यापन करने के लिए बाध्य है। परन्तु साहित्यिक विचारधारा मनुष्य के सोच-विचारों को नया आयाम प्रदान करती हैं। परंपरागत विचार, नवीन विचारधाराओं से मिलकर एक नवीन समाज का निर्माण होता है। यह सत्कार्य साहित्य से ही संभव है। साहित्य के गुण समाज में परिवर्तन लाने का निरंतर प्रयास करते रहते हैं। विचारों का खंडन और मंडन साहित्य के द्वारा संभव है। साहित्यिक विचारों के मंथन से अमृत का उद्भव होगा। सामान्य मनुष्य को चाहिए कि वह ऐसे साहित्य को अपनाये जो समाज के लिए अमृतधारा बनकर बरसे।

स्वातंत्रोत्तर भारतीय समाज में विषमतर स्थितियों का प्राबल्य था। तब हर क्षेत्र के महानुभावों ने सामाजिक हित के लिए कार्य करना प्रारंभ किया। साहित्यकारों का भी इस में बहुत बडा योगदान रहा है। उन्होंने इन प्रगतिवादी विचारों को, साहित्य के विभिन्न प्रकारों में लिपिबद्द करके जन सामान्य तक पहुँचाने का प्रयास भी किया। सामाजिक वैकल्य जैसे लिंग, वर्ग, वर्ण आदि भेदों से पीडित समाज को मुक्त करने का सफ़ल प्रयास भी हुआ। यही साहित्य का महत्तर उद्देश्य है।

90 के दशक में अनेक लेखिकाओं ने स्त्रीवाद, मानवतावाद और समाजवाद को सिद्द करने के लिए अपनी लेखनी चलाई । उनके बीच एक ऎसी लेखिका ने पदार्पण किया जो खुद को रूढिवाद से मुक्त कराके समाज में मानवतावाद को पुष्टि दिलाने के लिए कार्य निरत रहीं । वे साहित्यकार हैं रति सक्सेना । उत्तरी-भारत के राजस्थान और मध्य प्रदेश की मिट्टी से उनकी जडें जुडी हैं। लेकिन उनका कार्य क्षेत्र तो भारत का सुंदर दक्षिण का केरल राज्य रहा है । उनकी जीवन यात्रा से यह पता चलता है कि वे प्रांत भेद को मिटाने में सक्षम रहीं हैं। वे मलयालम,संस्कृत और अन्य विदेशी भाषाओं की ज्ञाता हैं । उन्होंने अनेक अंतराष्ट्रीय काव्य सम्मेलनों में भाग लिया है। अपने कर्म भूमि केरल राज्य में वे सफ़लता पूर्वक सम्मेलनों का आयोजन करके वैश्विक एकता को बनाए रखने का निरंतर प्रयास कर रही हैं ।

साहित्यकार **‘रति सक्सेना का समग्र साहित्य: एक अध्ययन’** इस विषय पर निष्ठा पूर्वक अध्ययन करइस शोध प्रबंध को लिपिबद्द किया गया है । उनके समग्र साहित्य का अध्ययन कर उनकी रचनाओं को काव्य, गद्य और अनुदित साहित्य आदि वर्गों में विभाजित करके विश्लेषित करने का प्रयत्न किया है ।

शोध की आवश्यकता एवं उद्देश्य:

‘शोध’ इस पद के अनेक पर्यायवाची शब्द हैं । जैसे अनुसंधान, गवेषण, खोज आदि । हर एक क्षेत्र में निरंतर शोध के कार्य न हों तो वह अभिवृद्दि विहीन रह जाएगा । फ़िर चाहे वह वैज्ञानिक हो या साहित्यिक क्षेत्र । शोध कार्य निरंतर हों तो सजीवता रहती है । शोध के

कारण ही अनेक तत्व, विचार जो अंधकार में थे, वे प्रकाश में आते हैं। वैचारिक परिवर्तन, सामाजिक, भावनात्मक शुद्दि आदि शोध प्रक्रिया से संभव है ।

अनादि काल से मानव अपनी जिज्ञासा और नये विचारों की खोज के कारण प्रगति कर रहा है । मौल्याधारित जीवन पद्दति को अपनाकर वह एक सुसंस्कृत जीवन अपनाने का प्रयास भी करता रहा है। शोध कार्य प्रत्येक क्षेत्र, विचार और व्यक्तित्व में ऊर्जा प्रदान करता है। सहजता से सकारात्मक परिवर्तन होता है।साहित्यिक क्षेत्र से संबंधित शोध मनुष्य की भावना तत्व और कल्पना तत्व को विस्तृत आयाम प्रदान करता है । कुछ शोध कार्य मनुष्य के आध्यात्मिक तत्व को भी प्रकाशित करते हैं । रति सक्सेना की रचनाएँ इस बात पर खरी उतरती हैं । अब तक उन पर शोध न होने कारण इसकी आवश्यकता थी। इसी कारण रति सक्सेना के साहित्य का बहु आयामी अध्ययन और विश्लेषण प्रस्तुत करना मेरे शोध का उद्देश्य है ।

शोध कार्य की पद्दतियाँ

शोध कार्य के समय शोधार्थी को अनेक पद्दतियों को अपनाना है। ताकि विषय के साथ न्याय हो। इससे शोधार्थी का कार्य सुलभ हो जाता है।

मैंने अपने शोध प्रबंध **'रति सक्सेना का समग्र साहित्य: एक अध्ययन'** में इस विषय के अनुरूप कुछ शोध पद्दतियों का पालन किया है। वे कुछ इस प्रकार हैं -

विश्लेषणात्मक पद्दति

तुलनात्मक पद्दति

भाषा वैज्ञानिक पद्दति

वर्गीय अध्ययन पद्दति

विश्लेषणात्मक पद्दति: प्रस्तुत शोध प्रबंध 'रति सक्सेना का समग्र साहित्य: एक अध्ययन' में उनके काव्य संग्रह, गद्य साहित्य और अनुदित साहित्य का विश्लेषण किया गया है। रति सक्सेना का साहित्य अत्यंत समृद्द है । उन्होंने मानवतावाद, स्त्रीवाद, परंपरावाद को अपने समग्र साहित्य में उजागर किया है। समाज और साथ ही मानवीय मूल्यों को धागों की तरह गूंथने का प्रयास किया है। मुझे उनके काव्यों में भावनात्मक तत्व को अनुभव करने का और विश्लेषणात्मक पद्दति द्वारा शोध कार्य करने का सुअवसर मिला है । 'चींटी के पर' एक यात्रा वृत्तांत होने के कारण कल्पना तत्व के आधार पर विश्लेषणात्मक पद्दति से शोध कार्य के लिए सहयोगी सिद्द हुआ है । इनमें बिम्ब, अलंकार, भाषा शैली का विस्तृत रूप से शोध हुआ है । अनुदित साहित्य में उभरी कहानियाँ और काव्य, प्रांतीय भाषा तथा संस्कृति को विश्लेषणात्मक पद्दति से शोध कार्य में सिद्द करने का अवसर प्रदान करती हैं। विश्लेषणात्मक पद्दति का अनुसरण इस शोध प्रबंध में हुआ है ।

तुलनात्मक पद्दति: समकालीन हिन्दी साहित्य में रति सक्सेना का एक विशिष्ट स्थान है । उन्होंने भाषा, भावनाएँ, प्रांत, वर्ग भेद को लांगकर अपने साहित्य को समग्रता प्रदान करने का प्रयास हो रहा है ।

रति सक्सेना ने मलयालम तथा संस्कृत भाषा से हिन्दी में साहित्यिक अनुवाद किया है। इन कृतियों का शोध कार्य तुलनात्मक पद्दति के सहारे ही संभव हो पाया है ।

भाषा वैज्ञानिक पद्दति: भाषा विज्ञान, भाषा के स्वरूप और संरचना को समग्र रूप से जानने की वैज्ञानिक पद्दति है। भाषा और विज्ञान का अटूट संबंध है। इस पद्दति द्वारा साहित्य में प्रमुख भाषा में निहित शब्दों के अर्थ को जान सकते हैं। प्रस्तुत शोध कार्य में लेखिका की साहित्यिक भाषा, उनमें निहित क्षेत्रीय भाषा व बोली तथा उनमें उभरे पर्यायवाची शब्द, आदि का वैज्ञानिक पद्दति के अनुसार शोध कार्य हुआ है ।

वर्गीय पद्दति: इस पद्दति में शोध कार्य का क्षेत्र कवि और साहित्य के साथ उनका वर्ग विशेषताएँ भी होती हैं । यहाँ लेखक अपनी मौलिकता के साथ वर्ग विशेष के अनुरूप साहित्यिक साधना करते हैं । प्रस्तुत शोध कार्य में रति सक्सेना के अनुदित साहित्य विभाग में अय्यप पणिक्कर की कृति कुरुक्षेत्र को वर्गीय पद्दति द्वारा परिचित करने का प्रयास किया है । वर्गीय मार्क्सवादी तत्व हिन्दी साहित्य में परिचित हुआ है ।

इस प्रकार उपर्युक्त शोध पद्दतियों के द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य में न्याय देने का प्रयास किया गया है ।

शोध विषय की सीमा एवं व्याप्ति:

सृष्टि में विस्मयकारी घटनाएँ घटती हैं । हर घटना के पीछे एक कारण होता है। उस कारण की खोज के लिए कार्य करना आवश्यक है । कार्य-कारण का अनन्यत्व सिद्द करने हेतु शोध की प्रक्रिया की आवश्यकता है । जब शोध कार्य व्यवस्थित रूप से सिद्द होता है तो समाज में सकारात्मक परिवर्तन होते हैं । साहित्य का क्षेत्र हो या वैज्ञानिक क्षेत्र, नये विचारों पर शोध भी अनिवार्य है । प्रस्तुत शोध प्रबंध का केंद्र साहित्यकार रति सक्सेना, हिन्दी समकालीन

साहित्य और नवीन काल में भी अपना विशेष स्थान रखती हैं । उनका साहित्य समग्र और समृद्द है । अब तक उन्होंने सात काव्य संग्रह, एक यात्रा स्मृति और अनुदित साहित्य का सृजन किया है । उनके काव्य संग्रह समाज को परंपरावाद के बंधनों से मुक्त करके मौल्याधारित तथा आदर युक्त जीवन जीने की कला को दर्शाते हैँ। समाज में स्त्रियों पर हो रहे अनेक प्रकार के अत्याचार और अनाचारों का खण्डन तथा मानवतावाद और स्त्रीवाद को एक नया आयाम प्रदान करने का श्रेय भी उन्हें जाता है। उनके साहित्य में आध्यात्मिक तत्व का प्रसार तथा सकारात्मक विचारों का अध्ययन-मनन करना ही इस शोध प्रबंध की सीमा और व्याप्ति है ।

कार्य विभाजन:

विषय की समग्रता एवं व्यापकता को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक शोध कार्य का विभाजन होता है । यहाँ पर प्रस्तुत शोध प्रबंध – **'रति सक्सेना का समग्र साहित्य: एक अध्ययन'** छः अध्यायों में विभाजित किया गया है ।

1. प्रथम अध्याय: रति सक्सेना का साहित्य : एक परिचय
2. द्वितीय अध्याय: रति सक्सेना का काव्य : भाव पक्ष
3. तृतीय अध्याय : रति सक्सेना का कहानी साहित्य: तात्विक विवेचन
4. चतुर्थ अध्याय: रति सक्सेना का अन्य गद्य साहित्य : एक विश्लेषण
5. पंचम अध्याय: रति सक्सेना का साहित्य: कला पक्ष

उपसंहार

परिशिष्ट – 1. रति सक्सेना का व्यक्तित्व और कृतित्व

परिशिष्ट – 2. साक्षात्कार

परिशिष्ट – 3. संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रथम अद्याय: रति सक्सेना का साहित्य: एक परिचय

हिन्दी साहित्य में रति सक्सेना का अपना एक विशिष्ट स्थान है । 1990 के द्शक से लेकर प्रस्तुत समय तक उनका साहित्य किस प्रकार प्रभावी रहा है इस विषय पर यह शोध आधारित है। रति सक्सेनाजी की साहित्यिक यात्रा काव्य रचनाओं से प्रारंभ होती है। उनके छः काव्य संग्रह धीरे धीरे हमें भौतिक कोश से तात्विक कोश तक लेकर जाती है। इन कविताओं में मनुष्य के जीवन मूल्यों की प्रेरणा है । उसके साथ रति सक्सेना ने समकालीन महिला साहित्यकारों के स्त्रीवाद इसकी चर्चा की है । इसके साथ साहित्य के मूल में मानवतावाद को सिद्द करते हुए नवीन विचारों का स्वागत भी किया है । लेकिन वे वैश्विकरण से शिथिल होते मानवीय मूल्यों पर चिंता व्यक्त करती हैं । महिला सबलीकरण पर बल देनेवाली उनकी कविताओं के मुख्य तत्व कल्पना तत्व को इस शोध कार्य में प्रमाणित करने का प्रयास किया है । गद्य साहित्य में’चींटी के पर” यात्रा वृत्तांत को लिपिबद्द किया है । मनुष्य की प्रवृत्ती घुमक्कड है । इससे वह अनेक विचारों को समझकर अपने जीवन को परिपूर्णता प्रदान करता है । उनके यात्रा वृत्तांत हमें स्वदेशी तथा विदेश के संस्कृति से परिचित करता है । उनके अनुदित साहित्य भी उल्लेखनीय हैं। मलयालम भाषा तथा अन्य विदेशी भाषा के गद्य और काव्य को हिन्दी में अनुदित करने का श्रेय रति सकसेना को जाता है ।

उनकी साहित्य की सेवा आज भी निरंतर चल रहीं है। उनके निर्देशन में “कृत्या फ़ौंडेशन” के अंतर्गत देश-वेदेशों के साहित्यकारों को अपने साहित्य को मंडन करने का अवसर भी प्राप्त होता है। तकनीकी प्रगति से अपने आप को जोडकर अंतर्जाल के माध्यम से लेखन आदि लिखकर वे अपनी साहित्य की कृषि कर रहीं हैं । आजकल मानसिक हो या दैहिक रोग उसे दूर करने के लिए अनेक प्रकार की “थेरपी” का प्रयोग किया जाता है। रति सक्सेना ने भावनात्मक कविताओं द्वारा लोगों को दैहिक और मानसिक पीडा से मुक्त करने के लिए ’पोएट्री थेरपी’ का प्रयोग तिरुवनंतपुरम में प्रारभ किया है । कुछ हद तक सफ़ल भी हुआ है । कोविड-19 महामारी के चलते यह कार्य रुक गया था। लेकिन एक बार फ़िर से प्रारंभ करने का उन्होंने बीडा उठाया है। इस सामाजिक हित के कार्य में समकालीन साहित्य का नया प्रयोग साहित्य को एक अलग आयाम प्रदान करता है । इस अध्याय में रति सक्सेना के साहित्य का परिचय दिया गया है ।

द्वितीय अध्याय: रति सक्सेना का काव्य: भाव पक्ष

इस अध्याय में हम रति सक्सेना के काव्य में उभरे भाव पक्ष को सिद्द किया गया है । समकालीन साहित्य में प्रस्तुत अनेक भाव पक्ष से जुडी हैं रति सक्सेना । उन्होंने अपने काव्य संग्रह में प्रमुखत: नारी के विविध स्वरूप को दर्शाया है। उनकी कविताओं से नारी की सबलता को एक नया आयाम मिल पाया है । सामाजिक विसंगतियों को जड से हटाने का संदेश दिया है। जागतीकरण, आधुनीकी मनुष्य की मानसिक स्थिति में हो रहे बदलाव को भी दर्शाया है। पर्यावरण पर हो रहे परिणामों पर भी गहरी चिंता व्यक्त की है। आने वाली पीढी को संस्कार और नैतिक मूल्यों से अवगत करने के आयाम से भी कविताएँ लिखी हैं। स्त्री समानता तो केवल

बातों तक सीमित न रहकर सामाजिक स्तर पर पुरुष सत्तात्मकता का बोला बाला उनके काव्य से दिखाई देता है। स्त्री पर होनेवाले मानसिक और शारीरिक अत्याचार पर तीखा प्रहार करते हुए वे कविताएँ लिखती हैं।

हिन्दी भाषा साहित्यकार का हिन्दी में साहित्य लिखना सहज सा विषय है। परन्तु अन्य भाषाओं के अध्ययन से साहित्य का विस्तार मात्र ही नहीं आंतरिक विमर्श भी होता आ रहा है। रति सक्सेना ने अन्य भाषाओं की कृतियों को हिन्दी में अनुदित करके हिंदी साहित्य की वृद्दि की है। इसी कारण मैंने उनके समग्र साहित्य को अपने शोध का विषय चुना। इससे उनके काव्य साहित्य के योग्दान को न्याय मिल सके और यह लोगों तक पहुँचे। इस अध्याय में काव्य को दो मुख्य भागों में विभाजित किया है ।

मौलिक काव्य साहित्य: काव्य संग्रह : छः हैं।

अनुदित काव्य साहित्य: काव्य संग्रह: मुख्यत: चार हैं।

इस अध्याय में उनकी समस्त काव्य कृतियों पर एक दृष्टि डाली गयी है। रति सक्सेना के छ: मौलिक काव्य संग्रहों का अध्ययन हुआ है । उनकी मौलिक एवं अनुदित कृतियों के आशय को स्पष्ट किया है । उनकी कविताएँ विविध आयामी हैं और भाव पक्ष को बिंबित करती हैं । जिनका इस अध्याय में विश्लेषणात्मक अध्ययन हुआ है ।

तृतीय अध्याय : रति सक्सेना का कहानी साहित्य: तात्विक विवेचन

रति सक्सेना का गद्य साहित्य प्रमुखत: मौलिक एवं अनुदित है । लेकिन उन्होंने कहानी संग्रह को मलयालम भाषा से हिन्दी में अनुदित किया है ।

कारूरु नीलकण्ठ पिळ्ळै की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ: कारूरु नीलकण्ठ पिल्लै जैसे महान साहिति, कहानीकार के साहित्य को हिन्दी भाषा में अनूदित करने का सौभाग्य रति सक्सेना जी को प्राप्त हुआ है। 'मसान का नारियल दरख्त', 'जवाहरों का सौदागर', 'भूत-पिशाच की कमीज़', 'स्मारक', 'गोपालन नायर का होटल', 'उत्तुप्पान का कुँआ', 'शोभा यात्रा की ड्यूटी', 'छाता मरम्मत करवाना है?', राहगीर' आदी उनकी दस सर्वश्रेष्ठ कहानियों को हिन्दी में अनूदित करने का कार्य रति सक्सेना ने किया है।

पिळ्ळैजी की कहानियों की विशेषता – सरल भाषा का प्रयोग, वर्णन शैली की पारदर्शिकता, सजीव संवाद हम रति सक्सेना के अनूदित कहानियों में देख सकते हैं।

कहानियों के तत्वों पर आधारित नीलकण्ठ पिळ्ळै की कहानियाँ मनुष्य के मनोविज्ञान और सामाजिक सत्य को पाठकों तक पहुँचाने का कार्य करती हैं। उनकी इसी सरलता के कारण केवल मलयालम् भाषा तक ही नहीं अपितु भारतीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने में सक्षम है।उनकी कहानियों का कथा नायक साधारण आदमी ही होता है। वह अपने जीवनाद्यंत असाधारण मूल्यों के लिए संघर्ष करते पाये जाते हैं। नीलकण्ठ पिळ्ळै जी की मलयालम् में कुल बीस कहानी संग्रह प्रकाशित हैं। ऐसे कहानीकार की कृति को हिन्दी भाषियों तक पहुँचाने का कार्य रति सक्सेना ने किया है। हिंदीतर भाषा के साहित्य को जानने के लिए पहले भाषा को जानना आवश्यक होता है। बहु भाषी ज्ञाता रति जी ने कारूरु नीलकण्ठ पिल्लै की कहानियों को अनुदित करके शोधार्धियों को कहानी तत्वों के आधार पर विश्लेषण करने का अवकाश प्रदान किया है।

उनके दस कहानियों में हर एक कहानी का सारांश लिखकर उसे कहानी तत्वों के तथा प्रस्तुत कहानी में उभरे तत्वों के आधार पर विमर्शात्मकता से परखने का प्रयत्न किया है। रति सक्सेना ने भी हिन्दी भाषा में अनुदित करते समय कहानियों के तात्विक मूल्यों कायम रखा है। इस अध्याय में हमने कहानियों के माध्यम से विभिन्न भाषा के शब्द, प्रादेशिक विशेषता तथा सांस्कृति को जाना है और अति सामान्य मनुष्य की जिजिविशा को भी सिद्द किया है।

चतुर्थ अध्याय: रति सक्सेना का अन्य गद्य साहित्य: एक विश्लेषण

इस अध्याय में रति सक्सेना के मौलिक गध्य साहित्य और अनुदित गध्य साहित्य के रूप में विभाजित किया है। यहाँ मौलिक गद्य साहित्य और अनुदित गद्य साहित्य की वस्तु और पात्र चित्रण का विश्लेषण किया गया है।

गद्य साहित्य: रति सक्सेना के गद्य साहित्य प्रकार में प्रमुख रचना उनका यात्रा वृत्तांत 'चींटी के पर' है। इस यात्रा वृत्तांत में लेखिका रति सक्सेना ने अपने जीवन वृत्तांत को 'चींटी के पर' के शब्दिक तथा लक्ष्यार्थ से जोड़कर उसके उद्देश्य का चयन किया है। 'चींटी के पर' कुल 14 स्थानों का वृत्तांत लेकर पाठकों के सामने आता है। उसमें पहले छः वृत्तांत भारतीय स्थलों के बारे में वर्णन करते हमें स्वदेश की गरिमा तक ले जाते हैं।

सातवें वृत्तांत से चौदहवें वृत्तांत तक विदेशी प्रदेशों का वर्णन मिलता है। यूरोप खण्ड की यात्रा का इसमें वर्णन है। इस लिए इस 'चींटी के पर' को विमर्श में लेते समय हमने स्वदेशी यात्रा और विदेशी यात्रा वृत्तांत के रूप में प्रस्तुत किया है।

रति सक्सेना ने 'चींटी के पर' यात्रा वृत्तांत में स्वदेशी यात्रा के दौरान भारत की भव्य संस्कृति, प्राकृतिक धरोहर, सामाजिक यथार्थ, आध्यात्म तथा धार्मिक तत्व और भाषा शैली (कल्पना तत्व) को अपनाते हुए एक बहु आयामी विषय को पाठकों के स्म्मुख रख है।

पत्रिकाओं में तथा अंतर्जाल में प्रकाशित कुछ लेखों के विविध आयाम:

हमारा समाज शिक्षित समाज कह लाता है । दुनिया तकनीकी प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रही है । इसके साथ मनुष्य की बुद्धि तीव्र हो रही है । परन्तु वह मानसिक रूप से कमजोर होता दिखाई दे रहा है । समाज के छोटी छोटी समस्याओं का सामना करने की शक्ति मनुष्य खो रहा है । नैतिक मूल्यों का नाश हो रहा है । क्रोध, जुगुप्सा, तनाव, खिन्नता जो मानसिक अस्वस्थता की निशानियाँ हैं । वह आंकड़ों में बढ़ रही हैं ।

आत्महत्या, मादक पदार्थों का सेवन आदि सामाजिक पीडा के अंतर्गत आते हैं । इन आयामों को भी शोध का मुख्य विषय के रूप में लिया है ।

पंचम अद्याय :रति सक्सेना का साहित्य : कला पक्ष

कवयित्री सक्सेना के काव्य साहित्य में हमें समकालीन कविताओं के सभी लक्षणों को साकार होते हुए देख सकते हैं । प्रकृति के चाँद, सूरज, नदी झरना सभी काव्य के साधन बने हैं । स्त्री की श्रृंगारिकता, श्रृंगार रस बनके उभरा है । वात्सल्य भाव से उनकी कविताएँ संप्रेषित हैं । पिता का प्रेम भाव, दादी-नानी का मोह भाव इनकी मुख्य वस्तु बनी है । नारसीदिम से लेकर अमरत्व तक काव्य वैशाल्यता प्राप्त करती दिखाई देती है । कविता की काव्य शैली और शिल्प के नियमों को रति सक्सेनाजी न्याय देती दृष्टिगोचर होती हैं । इस प्रकार शोध कार्य में

भाषा शिल्प को न्याय देने का प्रयास किया गया है। काव्य में उपयुक्त ध्वनि, शब्द, वाकय और अलंकारों को उदाहरण पूर्वक सिद्द किया है ।

हिन्दी भाषा का गद्य साहित्य समुद्र की तरह विशाल है । रति सक्सेना जी जो प्रमुख काव्य प्रकार में सिद्ध हस्त हैं । उन्होंने यात्रा वृत्तांत को लिखकर गद्य साहित्य में अपनी एक छाप छोड़ी । 'चींटी की उड़ान' एक ऐसा गद्य साहित्य हैं जहाँ हमें चींटी के पर निकलने के बारे में सोचने पर मजबूर हो जाते हैं

उनके यात्रा वृत्तांत में हमें सारे जग की संस्कृति जीवन शैली आदि के बारे में शोध किया गया । रति सक्सेना जी एक बहु भाषा विदुषी बनकर उभरी हैं ।

उनकी कविताओं में बौद्धिकता है और स्भी को समेटकर व्यंजनों की भाँति परोसने की कला रतिजी के साहित्य में है ।

उपसंहार:

रति सक्सेना का समग्र साहित्य : एक अध्ययन इस शोध प्रबंध में रति सक्सेना का समग्र साहित्य और उनके विचारों का विश्लेषण हुआ है । लेखिका अपने जीवन में रूढिवादी विचारधारा से काफीप प्रभावित रही और उसके कारण उन्हें काफी कुछ सहना पड़ा । उन सभी पिवरीत स्थितियों का प्रभाव उनके लेखन में प्रतिबिम्बित होता है । फ़िर भी वे अपने अस्तित्व को बनाने की जिजिविषा रखती है और अपनी साहित्यिक यात्रा पर अग्रसर होती है । उन्होंने अनेक कठिनाइयों का सामना किया और अपना अध्ययन भी जारी रखा । आज साहित्य के क्षेत्र में वे अपना एक विशिष्ट स्थान रखती हैं । स्त्रीवाद से मानवतावाद, शून्यत्व से

पूर्णत्व तक की उनकी साहित्यिक यात्रा में बहुभाषाओं का संगम मिलता है। उनके काव्य, गद्य और अनुदित साहित्य में विविध भाषा, क्षेत्र और संस्कृति का परिचय मिलता हैं। कविताओं में उभरा भाव तत्व और आध्यात्म तत्व मानव जीवन को नया आयाम देती हैं । उनकी कृत्या फ़ौडेंशन विश्वबंधुत्व के प्रसार में कार्य निरत हैं। उनका 'पोयेट्री हीलिंग थेरपी' भविष्य में लोगों के स्वास्थ्य संजीविनी के रूप में उभरे इसी आशा में इस शोध कार्य किया गया है ।

****